# ( १९ ) सावन की पहली .....

दिव्यध्वनि वीरा खिराई आज शुभ दिन
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम;
आत्म स्वभावं परभाव भिन्नम्,
आपूर्णमाद्यंत - विमुक्तमेकम्।

मेरे प्रभु विपुलाचल पर आये, वैशाखी दसमी को घातिया खिपाये;
क्षण में लोकालोक लखाये, किन्तु न प्रभु उपदेश सुनाये।
वाणी की काललब्धि आई नहीं उस दिन;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम॥ 1॥

इन्द्र अवधिज्ञान उपयोग लगाये, समवसरण में गणधर न पाये;
इन्द्रभूति गौतम में योग्यता लखाये, वीर प्रभु के दर्शन को आये।

काललब्धि लेकर के आई आज गौतम;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम॥ 2॥

मेरे प्रभु ऊँकार ध्वनि को खिराये, गौतम द्वादश अङ्ग रचाये;
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सत् समझाये, तन चेतन भिन्न-भिन्न बताये।
भेद-विज्ञान सुहायो आज शुभ दिन;
धन्य-धन्य सावन की पहली है एकम॥ 3॥

य एव मुक्ता नयपक्षपातं स्वरूपगुप्ता निवसन्ति नित्यम्;
विकल्प जाल च्युत शान्तचित्तास्त एवं साक्षातमृतं पिबंति।
स्वानुभूति की कला सिखाई आज शुभदिन;
धन्य-धन्य सावन की पहल एकम॥ 4॥